(E - 113) केवलिकन्ये वाङ्मय गंगे

केवलिकन्ये वाङ्मय गंगे जगदंबे अघ नाश हमारे;
सत्य स्वरूपे मंगलरूपे मनमंदिरमें तिष्ठ हमारे। टेक

जंबूस्वामी गौतम गणधर, हुए सुधर्मा पुत्र तुम्हारे;
जगतैं स्वयं पार ह्वै करके, दे उपदेश बहुत जन तारे। १

कुंदकुंद अकलंक देव अरु, विद्यानंदि आदि मुनि सारे;
तव कुलकुमुद-चंद्रमा ये शुभ, शिक्षामृत दे स्वर्ग सिधारे। २

तूने उत्तम तत्त्व प्रकाशे, जगके भ्रम सब क्षयकर डारे;
तेरी ज्योति निरख लज्जा वश, रविशशि छिपते नित्य बिचारे। ३

भवभय पीडित व्यथित चित्त, जिन जब जो आये सरन तिहारे;
छिनभरमें उनके तब तुमने, करुणा करि संकट सब टारे। ४

जबतक विषय कषाय नशै नहि, कर्मशत्रु नहि जाय निवारे;
तबतक 'ज्ञानानंद' रहै नित, सब जीवनतैं समता धारे। ५